# राजा एवं उसके कर्तव्य सम्बन्धी मनु के विचार- (B.A. III)

मनु जी राजा की दैवी उत्पत्ति के सम्बन्ध में विश्वास है। मनु ने राजा को अनेक देवताओं के स्वरूप अंश से निर्मित बताया है। राजा ईश्वर द्वारा उत्पन्न है अतः उसका अपमान नहीं करना चाहिए। राजा से घृणा करने का अर्थ है स्वयं को विनाश की ओर ले जाना। मनु के अनुसार राजा में देवताओं का अंश है अतः वह स्वयं एक देवता बन जाता है। मनुस्मृति में उल्लेख है, "ऐसा राजा इन्द्र अथवा विद्युत के समान ऐश्वर्ययुक्त, पवन के समान सबको प्राणवत प्रिय तथा हृदय की बात जानने वाला, यम के समान पक्षपात रहित न्यायाधीश, सूर्य के समान न्याय, धर्म तथा विद्या का प्रकाश, अग्नि के समान दुष्टों को भस्म करने वाला, वरुण के समान दुष्टों को अनेक प्रकार से बाँधने वाला, चन्द्र के समान श्रेष्ठ पुरुषों को आनन्द देने वाला तथा कुबेर के समान कोष भरने वाला होना चाहिए।"

मनु ने राजा के गुणों और कर्तव्यों का विस्तार से उल्लेख किया है। उनके विचार से राजा को प्रजा तथा ब्राह्मणों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। राजा को सदैव अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना चाहिए। उसे काम, क्रोध आदि से मुक्त रहना चाहिए। राजा को जुआ, शिकार, दिवाशयन, परनिन्दा, परस्त्री प्रेम, मद्यपान, नाच-गाना, चुगलखोरी, ईर्ष्या, परदोषान्वेषण, कटुवचन, धन का अपहरण आदि से बचना चाहिए।

मनुस्मृति में राजा को दिये गये प्रमुख निर्देश निम्न हैं:—

1. राजा को शस्त्र, धन-धान्य, सेना, जल इत्यादि से परिपूर्ण पर्वतीय दुर्ग में निवास करना चाहिए।
2. राजा को अश्वमेध, विश्वजीत आदि यज्ञ का आयोजन करना चाहिए एवं ब्राह्मणों को प्रचुर दान करना चाहिए।
3. राजा को सवजातीय और सर्वगुण सम्पन्न स्त्री से विवाह करना चाहिए।
4. प्रजा से कर वसूलने का कार्य ईमानदार एवं योग्य कर्मचारियों द्वारा किया जाना चाहिए। प्रजा से कर लेते समय पितातुल्य व्यवहार करना चाहिए।
5. विभिन्न राजकीय कार्यों के लिए अनेक अधिकारियों की नियुक्ति करनी चाहिए।
6. राजा को युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए।
7. राजा विस्तारवादी नीति अपनाये।
8. अपनी वीरता और सैन्य बल का हमेशा प्रदर्शन करना चाहिए।
9. मजबूत गुप्तचर व्यवस्था रखनी चाहिए।
10. राजा को सदैव सतर्क रहना चाहिए। अविश्वसनीय पर विश्वास न करे।
11. अपने मंत्रियों को सदैव विश्वास में रखना चाहिए।
12. राजा को राज्य की रक्षा तथा शत्रु के विनाश के लिए तत्पर होना चाहिए।
13. राजा कर्मचारियों, अधिकारियों की जाँच करता रहे।
14. राजा को मृदुभाषी होना चाहिए।

मनु ने राजा की दिनचर्या का भी वर्णन किया है। उन्होंने सम्पूर्ण दिन को तीन भागों में विभाजित कर प्रत्येक के लिए पृथक-2 कार्य निर्धारित किये हैं। राजकीय कार्यों के सम्बन्ध में अपने मंत्रियों के साथ तथा विदेशी मामलों में अपने गुप्तचरों और राजदूतों के साथ नियमित रूप से परामर्श करना चाहिए। इस प्रकार मनुस्मृति में राजा के गतिशील जीवन का उल्लेख किया गया है। इसमें राजा को हमेशा सतर्क और सावधान रहने की आशा की जाती है।

Scanned with CamSc

# राजा एवं उसके कर्तव्य सम्बन्धी मनु का विचार

## Questions

(1) मनुस्मृति किसकी रचना है?
(2) मनु राज्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में किस सिद्धान्त को मानते हैं?
(3) मण्डल सिद्धान्त और षाड्गुण्य नीति सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया है?
(4) मनु के अनुसार राजा को कर कैसे वसूल करना चाहिए?

---

(1) राजा के कर्तव्य के विषय में मनु के दृष्टिकोण की विवेचना कीजिए।
(2) राज्य के कार्यक्षेत्र के विषय में मनु के विचारों का परीक्षण कीजिए।
(3) राजा एवं उसके कर्तव्यों सम्बन्धी मनु के विचारों पर प्रकाश डालिए।

---

Scanned with CamSc